उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा): मैंने टाइम नहीं दिया, आपने लिया।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI (Andhra Pradesh): Sir, I want to submit...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): I have given the floor to Shri Shankar Dayal Singh.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH (Bihar): Let me finish my Special Mention. You can speak after that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Shankar Dayal Ji, you cannot permit him like that. Mr. Bhandari, you are objecting me but see the pattern. (*Interruptions*)

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: Shankar Dayal Ji, after that, you occupy the Chair and permit me.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): You can wait till then.

Decline in the Quality of Literary Programmes being telecast on Doordarshan

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, आपके आदेशानुसार मैं सरकार का ध्यान दूरदर्शन के साहित्यक कार्यक्रमों में गिरावट एवं एक ही तरह के कवियों और साहित्यकारों का बिना किसी तैयारी के इन कार्यक्रमों में भाग लेने के कारण दर्शकों की अरुचि की ओर दिलाना चाहता हूं।

महोदय, दूरदर्शन घर-घर की एक जरूरत बन गई है और चाहे किसी घर में बूढ़ा हो, नौजवान हो या बच्चा हो आधी आबादी देश की लगभग दूरदर्शन से संबंध रखती है। उसमें खासकर के रात को 8.40 से लेकर 11.30 तक जो कार्यक्रम होते हैं वे राष्ट्रीय कार्यक्रम हैं इन कार्यक्रमों में पत्रिका का कार्यक्रम होता है, साहित्यिक कार्यक्रम होता है, मुशायरे का कार्यक्रम होता है और कवि सम्मेलनों का कार्यक्रम होता है। महोदय, आपके माध्यम से मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि अब इनके स्तर में इतनी गिरावट आई है कि उससे न तो मनोरंजन ठीक से हो पाता है, न ज्ञानवर्धन ठीक से हो पाता है, न दर्शको पर कहीं कोई छाप पड़ती है और न ही साहित्यिक अनुभूतियां जागती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि इनके चयन के लिए कोई कमैटी नहीं है। धारावाहिकों के चयन के लिए या दूसरे धारावाहिक कार्यक्रमों के चयन के लिए तो समिति है, लेकिन इन सारे साहित्यिक कार्यक्रमों के लिए कोई समिति नहीं है। वहां पर एक व्यक्ति तय करता है। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि नाम तो उसका राष्ट्रीय कार्यक्रम है लेकिन केवल दिल्ली के लोगों की ही उसके अंदर प्रधानता रहती है ? इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान दिलाते हुए कहना चाहता हूं कि एक तो कमैटी बननी चाहिए। नम्बर, दो, जब राष्ट्रीय कार्यक्रम उसका नाम हो तो पूरे देश के साहित्यकारों को, कवियों को, कलाकारों को और शायरों को उसमें बुलाया जाना चाहिए, केवल दिल्ली के लोगों को नहीं। तीसरी बात इसमें यह है कि एक ही पैनल और स्टेट के लोग केवल नहीं रहे। ऐसा नहीं हो कि एक ही अधिकारी उसका निर्णय करता है और वही प्रोग्राम दे देता है, नतीजा यह है कि अपने चहेतों को और अपने चाहने वालों व मानने वालों को ही बुलाया जाता है और दूसरे कलाकार उसमें छूट जाते हैं।

इन्हीं शब्दों के साथ, आपका अधिक समय नहीं लेते हुए, मैं केवल अंत में यह कहना चाहता हूं कि जिस दूरदर्शन से हमें 290 करोड़ रुपए की 1991-92 में आय हुई है, उसमें आप देखें कि जो पापुलर धारावाहिक हुए-रामायण, महाभारत, चाणक्य-केवल चाणक्य से ही 16 करोड़ रुपए की आय हुई, दूसरी ओर जो सरकार के द्वारा निर्धारित कार्यक्रम हो रहे हैं, उनमें क्यों इतनी गिरावट आ रही है। मैं समझता हूं कि केंद्रीय सूचना और

[श्री शंकर दयाल सिंह]

प्रसारण मंत्री महोदय इसके लिए निश्चित रूप से कोई उपाय लेंगे और सदन में भी इस संबंध में एक वक्तव्य देंगे ।

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इनके साथ अपने को संबद्ध करता हूं और मैं यह कहना चाहता हूं कि यह बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया गया है, इस पर गंभीरता से विचार करके उचित निर्णय करना चाहिए ।

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल): मैं भी दूरदर्शन के कार्यक्रमों की गुणवत्ता को सुधारने के लिए इनके साथ ऐसोसिएट करती हूं ।

THE BHOPAL GAS LEAK DISASTER (PROCESSING OF CLAIMS) AMENDMENT BILL, 1992—Contd.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): Shrimati Sarala Maheshwari to continue her speech.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): Where is the concerned Minister?

श्रीमती सरला माहेश्वरी : मंत्री जी कहां है ?

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): He is coming.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): He was here all through.

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : चिंता मोहन जी को इसकी चिंता नहीं है ।

श्रीमती सरला माहेश्वरी : चिंता मोहन जी की चिंता आप क्यों कर रही हैं ? . . . (**व्यवधान**) . . आप क्यों चिंता कर रही हैं चिंता मोहन जी की ?

श्री सुन्दर सिंह भंडारी (राजस्थान) : जो सरकार चलाते हैं उनको ज्यादा चिंता होनी चाहिए ।

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : यह भी आ जाता है टाइम वेस्ट करने में ।

श्री शंकर दयाल सिंह : मैंने जो इतना बढ़िया सब्जेक्ट रखा, उस पर लोगों को बोलने देते जब चिंता मोहन जी नहीं हैं ।

श्रीमती सरला माहेश्वरी : भोपाल गैस विभिषिका (दावा कार्रवाई) संशोधन विधेयक, 1992 पर अपनी चर्चा की शुरुआत करते हुए मैंने यह कहा था कि भोपाल गैस विभिषिका हिरोशिमा नागासाकी के बाद दुनियां की सबसे बड़ी त्रासदी थी । एक ऐसी घटना जिसने एक झटके में लाखों की जिन्दगी को तबाह कर दिया था और इसीलिए भोपाल की इस विभिषिका को माननीय न्यायमूर्ति श्री कृष्ण अय्यर व इसे भोपोशिमा की संज्ञा दी थी । उपसभाध्यक्ष महोदय, उनकी यह टिप्पणी अकारण नहीं थी । उपसभाध्यक्ष महोदय, माननीय न्यायधीश महोदय ने जब इसे भोपोशिमा की संज्ञा दी थी तो उन्होंने भोपाल त्रासदी के तीन वर्षों बाद इस त्रासदी के कुत्सित परिणामों को देखा था । महोदय, इस त्रासदी में एक झटके में सिर्फ लाखों जिन्दगियां ही तबाह नहीं हुई, बल्कि इसने हमारे सामने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के दोहन कार्य रूप को भी उजागर किया और इसके साथ ही इस पूरे घटनाक्रम ने हमारे सामने राज सत्ता के पूंजीवादी, साम्राज्यवादी चरित्र को भी उजागर कर दिया ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहूंगी कि भोपाल की यह घटना 1984 में घटी । दो दिसम्बर को, मध्य रात्रि में जब पूरा भोपाल गहरी नींद में सोया हुआ था, उसी समय युनियन कार्बाइड के कारखाने से अचानक 40 टन जहरीली गैस का रिसाव हुआ और देखते ही देखते इस मिथाइल आइसो-सायनाइड गैस ने 3700 लोगों को हमेशा के लिए गहरी नींद में सुला दिया । हजारों की आंखों की रोशनी छीनली, हजारों लोगों को असाध्य दमें की बीमारी से आक्रांत कर दिया, असंख्य